तकनीकी पुस्तिका
कुटकी उत्पादन

संकलन

सिमार, हाट कल्याणी, देवाल, चमोली, उत्तराखण्ड।

सहयोग- गोबिन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान, कोसी, कटारमल, अल्मोडा।

कुटकी की खेती (Picrorhiza kurroa)

सामान्य नाम - कुटकी कडवी, केदार कडवी

व्यापारिक नाम - कुटकी

वानस्पतिक नाम - पिक्रोराइजा कुरूआ

वानस्पतिक कुल - स्कोफुलारेसी

उपयोग भाग - भूस्तारी तना, जडे

फूल - सफेद, नाले व बैगनी

आवास एवं स्वभाव - कुटकी एक बहुवर्षीय शाकीय औषधीय पादप है जो शीतोषण क्षेत्रों तथा एल्पाइन क्षेत्रों में २००० से ३५०० मीटर तक की ऊंचाई में होता है तथा आर्द चट्टानों में प्राकृतिक रूप मे पाया जाता है।

औषधीय उपयोग

- यह बलवर्धक टानिक के रूप में प्रयोग मे लाया जाता है।
- यह ज्वर नाशक एवं पितोत्सारी होता है।
- यह पेट दर्द, यकृत सम्बन्धी रोग, खॉसी, कब्ज, जुकाम, अस्थमा, ड्रप्सी और गठिया इत्यादि बीमारिया में प्रयुक्त होता है।
- यह हृदय रोग एवं उच्च रक्त चाप को कम करने में भी सहायक होती है।
- यह कम मात्रा में लेने पर रेचक और अधिक मात्रा में लेने पर विरेचक माना जाता हे। तथा तलशोथ रोग के उपचार में उपयोगी होता है।

संक्षेप में कुटकी का तना एवं जडें ही प्रमुखतः औषधीय उपयोग के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं तथा पत्तियों को सुखाकर हटा लिया जाता है।

कृषिकरण – कुटकी की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सवाधिक उपयुक्त पायी गयी है। ऐसे स्थान जो जैविक कार्बन युक्त हो तथा प्रर्णास्तरण की मोटी सतह या सडी गली पत्ती की खाद तथा आर्द्रता युक्त हो इसकी खेती के लिए अच्छे माने जाते है। कुटकी की उत्पादकता के लिए नम एवं छायादार स्थान उपयुक्त होते है।

कुटकी का कृषिकरण समुद्रतल से २००० मी० से ३५०० मी० ऊँचाई वाले नम और ढालदार स्थानों में खर्सू तथा मोरू के प्राकृतिक आवास क्षेत्रो में कृषिकरण की ब्यावसायिक की सभावनाए है।

प्रवर्धन एवं प्रसारण – कुटकी की प्रवर्धन बीज भूस्तानी तनों की कटिंग द्वारा किया जाता है।

- किन्तु बीज द्वारा किये गये प्रवर्धन में जड़ को औषधीय उपयोग हेतु तैयार होने में तीन से चार साल लगते हैं, वहीं पौध द्वारा प्रवर्धन किये जाने पर जड़ को औषधीय उपयोग हेतु तैयार होने में दो साल ३ माह से तीन साल लगते हैं।
- कलमो को खाईयों में मृदा एवं गीली काई से ढ़ककर रखने से भी जडे अधिक एवं जल्दी निकल जाती है।
- इसके अतिरिक्त जूट की गीली बोरियो में कलमो को पर्याप्त नमी मे एक सप्ताह तक रख देने से भी जड़े जल्दी आ जाती है।

फसल अवधि – कुटकी की पौध का रोपण मुख्यतः जून माह से अगस्त माह तक किया जाता है। फसल की कटाई रोपण के उपरान्त २ वर्ष ३ माह अथवा ३ वर्ष बाद की जाती है।

पौध संख्या तथा दूरी – प्रकन्द को जून से अगस्त माह तक प्रति नाली मे २००० से २२०० तक की पौध लगायी जा सकती है। कटिंग की पंक्तियों के बीच में १ फुट का अन्तर होना चाहिए। तथा पंक्ति की एवं पौध से पौध की दूरी १ फुट तक होना चाहिए।

रोपण हेतु खेत की तैयारी - कुटकी के रोपण हेतु खेत को कम से कम तीन बार जोतकर खर पतवार का पूर्णतः सफाया कर लेना चाहिए जुताई के उपरान्त खेत में पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिए ककड पत्थर जमीन भी कुटकी के रोपण हेतु ठीक रहती है।

- यदि फसल प्रकन्दों/जड़ों के माध्यम से उगाई जा रही तो पहली बार जून में खेत की जुताई करनी चाहिए।
- दूसरी जुताई से पहले जून-जुलाई १०-१५ कि० ग्राम० खाद को एक नाली भूमि में समान रूप स मिलाया जाता है।
- दूसरी और तीसरी जुताई जून के अन्त या मानसून के प्रारम्भ में की जाती है।

रोपण – कुटकी के पौध का रोपण वर्षा ऋतु में तथा जून से अगस्त माह तक किया जाता है परन्तु जिन स्थानों पर सिंचाई का प्रबन्धन हो तो अप्रैल में भी किया जा सकता है।

सिंचाई एवं निराई- गुड़ाई - कुटकी के कृषिकरण के लिए अत्यधिक नमी की आवश्यकता होती है, अतः कुटकी के पौध को प्रारंभिक दिनों में ३-३ दिन के अंतराल पर सिंचाई कर देने से जड़ अच्छी प्रकार से पकड़ लेती है उसके पश्चात ७ से १० दिन में एक बार सिंचाई करनी चाहिए।

अगर रोपण के तुरन्त पश्चात यदि बारिश नहीं हो रही हो तो मार्च, अप्रैल से जून, जुलाई तक प्रति सप्ताह समुचित सिचाई की आवश्यकता नहीं होती है।

पहली गुडाई एवं निराई पौध रोपण के २० से ३० दिन के अन्दर कर देनी चाहिए तथा दूसरी निराई एवं गुड़ाई आवश्यकतानुसार करनी चाहिए।

मुख्यतः खेत में कम से कम माह में दो बार सावधानी पूर्वक खरपतवार निकालनी चाहिए। शीतकाल में पाले से बचाने के लिए खेत को सूखी पत्तियों अथवा घास- फूस से ढ़कना लाभदायक पाया जाता है।

खाद व कम्पोस्ट – पौध रोपण से पूर्व खेत में प्रतिनाली १०- १५ कि० ग्राम० गोबर की खाद मिलानी चाहिए। तत्पश्चात रोपण के तीन माह बाद पौध के चारो और प्रति पौध १०० से १५० ग्राम गोबर की खाद डालकर हल्की गुडाई व सिंचाई कर लेनी चाहिए यह क्रम प्रति ४ या ५ माह के बाद नियमित रूप से दोहराना चाहि**ए।**

कीट नियत्रण – कुटकी के पत्तीयो को कीटों द्वारा नुकसान पहुचाया जाता है। इसके लिए राख, गोमुत्र, या नीम की खली का आवश्यकतानुसार छिड़काव कर लेना चाहिए।

फसल कटाई – फसल की कटाई कृषिकरण क्षेत्रों की ऊंचाई पर निर्भर करती है वैसे कटाई अक्टूबर- नवम्बर माह में की जाती है। दो वर्ष तीन माह से ३ वर्ष पश्चात् जड़ो की खुदाई की जाती है। पौध के ऊपरी भाग का जड़ों से सावधानीपूर्वक अलग कर देते है। क्योंकि पहले वर्ष में पैदावार बहुत कम होती है।

फसल पश्चात प्रबन्धन – प्रकन्दों को साफ पानी से अच्छी तरह धोना चहिए और छायादार स्थान पर सुखाने के पश्चात श्रेणीकरण किया जाता है। कुटकी के संग्रहण के वक्त अत्यधिक धूप, तेज हवा व बारिश रहित समय का चयन आवश्यक है। पारस्परिक विधि से भी जड़ो को सुखाया जा सकता है। परन्तु धुए इत्यादी का जडो पर कोई दूष्प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

भण्डारण – सूखे हुए मस्तानी तनो तथा सुडो को हवा बन्द स्थानों में या जूट के थलों में या गनी थैलों में भरकर विपणन के लिये भण्डारित किया जाता है। संग्रहित कुटकी की जड़ों को नमी, दीमक व धुए से दूर रखना उचित होता है।

विपणन एजेन्सी – कुटकी के विपणन हेतु पतंजलि, डाबर, इमामी, आर्गेनिक इण्डिया, जिला भेषज संघ, वन विकास निगम इत्यादि कम्पनियों से सम्पर्क किया जा सकता है।

औसतन उत्पादन – कुटकी की प्रति पौध से औसतन १० ग्राम उत्पादन होता है, प्रति नाली १५ – २२ किलोग्राम प्रति नाली होता है।

कृषिकरण लागत

प्रति नाली अनुमानित लागत	–	रू० २००० (३ साल)
प्रति नाली अनुमानित उत्पादन	–	१५– २२ कि० ग्रा० (सूखा)
वर्तमान बाजार भाव	–	८५०– १५०० प्रति कि०ग्रा०
कुल लाभ प्रति नाली	–	रू० १२७५०.०० – ३३०००.००
शुद्ध लाभ प्रति नाली	–	रू० १०७५०– ३१०००.००